Quest Journals
Journal of Hindi, Political Science and Home Science
Volume 14 ~ Issue 1 (Jan. – Feb. 2024) pp: 22-26
ISSN(Online) : 2347 – 2305
www.questjournals.org

Research Paper

भारतीय ज्ञान परंपरा और निराला

नेहा कुमारी
ग्राम- खदियाही, पोस्ट- विभूतिपुर,
जिला- समस्तीपुर (बिहार 848211)

सार

भारतीय ज्ञान परंपरा केवल धार्मिक ग्रंथों, दार्शनिक सिद्धांतों या शास्त्रीय वाङ्मय तक सीमित नहीं है; यह भारतीय समाज की सामूहिक स्मृति, नैतिकता, लोकबुद्धि, आध्यात्मिक चेतना, प्रकृति-दृष्टि, करुणा, समन्वय और मानव-मुक्ति की सतत धारा है। सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' आधुनिक हिन्दी कविता के ऐसे कवि हैं जिन्होंने भारतीय ज्ञान परंपरा को जड़ परंपरावाद के रूप में नहीं, बल्कि जीवंत, संघर्षशील, मानवीय और पुनर्व्याख्यायित सांस्कृतिक ऊर्जा के रूप में ग्रहण किया। उनके काव्य में वेदांत, भक्ति, रामकथा, शक्ति-पूजा, लोकजीवन, मानवतावाद, सामाजिक न्याय, नारी-गरिमा और करुणा जैसे तत्त्व एक साथ उपस्थित हैं। निराला की विशेषता यह है कि वे भारतीय परंपरा के भीतर से ही रूढ़ि, अंधविश्वास, सामाजिक विषमता और अन्याय का प्रतिरोध करते हैं। राम की शक्ति पूजा, तुलसीदास, सरोज-स्मृति, वह तोड़ती पत्थर, भिक्षुक और कुकुरमुत्ता जैसी रचनाएँ बताती हैं कि निराला भारतीय ज्ञान परंपरा को आधुनिक मानवीय संवेदना और सामाजिक चेतना से जोड़ते हैं। प्रस्तुत शोध-पत्र में यह विश्लेषित किया गया है कि निराला की काव्य-दृष्टि में भारतीय ज्ञान परंपरा आध्यात्मिकता, नैतिकता, लोकचेतना और सामाजिक मुक्ति के रूप में कैसे रूपायित होती है।

मुख्य शब्दः *भारतीय ज्ञान परंपरा, निराला, वेदांत, भक्ति, रामकथा, शक्ति-पूजा, लोकचेतना, मानवतावाद।*

1. प्रस्तावना

भारतीय ज्ञान परंपरा का स्वरूप अत्यंत व्यापक और बहुआयामी है। इसमें वेद, उपनिषद्, पुराण, रामायण, महाभारत, बौद्ध-जैन चिंतन, भक्ति-परंपरा, लोक-संस्कृति, योग, दर्शन, नैतिक चिंतन और जीवन-मूल्यों की दीर्घ परंपरा सम्मिलित है। यह परंपरा केवल शास्त्रीय ज्ञान की धारा नहीं, बल्कि जीवन को देखने की एक ऐसी दृष्टि है जिसमें सत्य, करुणा, आत्मबोध, सहअस्तित्व, धर्म, लोकमंगल और मानव-मुक्ति के प्रश्न निरंतर जुड़े रहते हैं [1]। आधुनिक हिन्दी साहित्य में इस परंपरा को अनेक कवियों ने अपने-अपने ढंग से ग्रहण किया, किंतु सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का स्थान विशेष है, क्योंकि उन्होंने भारतीय ज्ञान परंपरा को रूढ़िगत श्रद्धा के रूप में नहीं, बल्कि आलोचनात्मक, मानवीय और सृजनात्मक रूप में आत्मसात किया।

निराला छायावाद के प्रमुख स्तंभों में गिने जाते हैं, परंतु उनका काव्य छायावादी कोमलता और आत्मानुभूति तक सीमित नहीं है। उनके यहाँ आध्यात्मिकता है, किंतु वह जीवन-विमुख नहीं; परंपरा है, किंतु वह रूढ़िवादी नहीं; भक्ति है, किंतु वह निष्क्रिय समर्पण नहीं; विद्रोह है, किंतु वह भारतीय सांस्कृतिक भूमि से कटा हुआ नहीं [2]। यही कारण है कि रामविलास शर्मा ने निराला को आधुनिक हिन्दी कविता में सामाजिक चेतना, जनपक्षधरता और राष्ट्रीय-सांस्कृतिक पुनर्जागरण का महत्त्वपूर्ण कवि माना है [3]।

भारतीय ज्ञान परंपरा की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वह मनुष्य को केवल भौतिक सत्ता नहीं मानती, बल्कि उसे चेतन, नैतिक और आत्म-साक्षात्कारक्षम प्राणी के रूप में देखती है। निराला की कविता में भी मनुष्य की गरिमा, आत्मसम्मान

और संघर्षशीलता को अत्यंत महत्त्व प्राप्त है। वे परंपरा से शक्ति लेते हैं, परंतु उस शक्ति का उपयोग समाज में पीड़ित, उपेक्षित और शोषित मनुष्य के पक्ष में करते हैं। इस दृष्टि से निराला भारतीय ज्ञान परंपरा के आधुनिक पुनर्पाठ के कवि हैं [4]।

2. भारतीय ज्ञान परंपरा की अवधारणा और निराला की दृष्टि

भारतीय ज्ञान परंपरा का मूल आधार समग्रता है। यहाँ ज्ञान केवल सूचना या बौद्धिक उपलब्धि नहीं, बल्कि जीवन का अनुशासन और आत्म-विकास की प्रक्रिया है। उपनिषदों में आत्मा और ब्रह्म की एकता, गीता में कर्मयोग, बौद्ध चिंतन में करुणा, जैन दर्शन में अहिंसा, भक्ति में प्रेम और लोक-संस्कृति में सामुदायिक जीवन-बुद्धि—ये सभी भारतीय ज्ञान परंपरा के विविध आयाम हैं [5]। निराला इस परंपरा को संकुचित धार्मिकता की तरह नहीं अपनाते, बल्कि उसमें से मानवीय शक्ति और सांस्कृतिक आत्मबोध ग्रहण करते हैं।

निराला की वैचारिक संरचना में वेदांत, भक्ति, रामकथा, शक्ति-साधना और लोकजीवन के अनुभव एक साथ सक्रिय हैं। वे भारतीय परंपरा को स्थिर अतीत नहीं मानते। उनके लिए परंपरा तब तक सार्थक है जब तक वह वर्तमान मनुष्य के दुख, संघर्ष और मुक्ति से जुड़ सके। यही कारण है कि उनकी कविता में राम, शक्ति, तुलसी, भिक्षुक, पत्थर तोड़ती स्त्री, श्रमिक और किसान—सभी एक ही व्यापक मानवीय धरातल पर आते हैं [6]।

निराला की भारतीयता किसी सांप्रदायिक आग्रह पर आधारित नहीं है। उनकी भारतीयता बहुल, मानवीय और लोकधर्मी है। वे शास्त्रीय प्रतीकों को लोकानुभव से जोड़ते हैं और लोकजीवन की पीड़ा को उच्च सांस्कृतिक संवेदना का विषय बनाते हैं। इस प्रकार उनकी कविता भारतीय ज्ञान परंपरा को अभिजात्य बौद्धिकता से निकालकर जनजीवन की जमीन पर स्थापित करती है [7]।

3. वेदांतिक चेतना, आत्मबोध और निराला

भारतीय ज्ञान परंपरा में वेदांत का केंद्रीय प्रश्न आत्मबोध है। आत्मा, ब्रह्म, जगत्, माया, मुक्ति और चेतना से जुड़े प्रश्न भारतीय चिंतन की मूल धारा रहे हैं। निराला के काव्य में आत्मबोध का स्वर गहरे स्तर पर उपस्थित है, परंतु यह आत्मबोध केवल आध्यात्मिक समाधि या जगत्-विमुखता नहीं है। यह जीवन-संघर्ष से गुजरकर प्राप्त होने वाली चेतना है [8]।

निराला का व्यक्तित्व स्वयं संघर्ष, अकेलेपन, आर्थिक कठिनाइयों, पारिवारिक दुख और सामाजिक उपेक्षा से निर्मित हुआ। इसलिए उनके यहाँ आत्मबोध अनुभव की कठोर भूमि पर खड़ा है। *सरोज-स्मृति* में निजी शोक आत्मपीड़ा तक सीमित नहीं रहता, बल्कि वह जीवन, मृत्यु, स्मृति और मनुष्य की नियति पर गंभीर चिंतन में बदल जाता है [9]। यह भारतीय ज्ञान परंपरा की उस दृष्टि से जुड़ता है जहाँ दुख आत्मचेतना का माध्यम बन सकता है।

निराला के यहाँ आत्मा का बोध मनुष्य को निष्क्रिय नहीं बनाता। वह उसे अन्याय के विरुद्ध खड़ा करता है। वेदांत का अद्वैत यदि समस्त अस्तित्व में एकता का बोध कराता है, तो निराला की मानवीय चेतना इस एकता को सामाजिक करुणा में बदल देती है। 'भिक्षुक' और 'वह तोड़ती पत्थर' जैसी कविताओं में कवि का आत्मबोध दूसरों के दुख से एकात्म होता है [10]। यहाँ आध्यात्मिक चेतना सामाजिक संवेदना में रूपांतरित होती है।

4. 'राम की शक्ति पूजा': परंपरा का आधुनिक पुनर्पाठ

राम की शक्ति पूजा निराला की सर्वाधिक चर्चित और महत्त्वपूर्ण कविताओं में से है। यह कविता भारतीय ज्ञान परंपरा, रामकथा, शक्ति-साधना और आधुनिक संघर्ष-बोध का अद्भुत समन्वय प्रस्तुत करती है। राम भारतीय सांस्कृतिक स्मृति में धर्म, मर्यादा, नीति और आदर्श पुरुषार्थ के प्रतीक हैं। किंतु निराला के यहाँ राम सर्वशक्तिमान देवता के रूप में नहीं आते; वे संघर्षरत, संदेहग्रस्त, तपस्वी और शक्ति की खोज करने वाले मानवीय नायक के रूप में उपस्थित होते हैं [11]।

इस कविता में शक्ति की उपासना केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं है। यह मनुष्य की आंतरिक ऊर्जा, संकल्प, आत्मविश्वास और संघर्ष-क्षमता का प्रतीक है। राम को विजय के लिए शक्ति की आवश्यकता है। यह संकेत अत्यंत महत्त्वपूर्ण है कि नैतिकता और आदर्श तब तक पर्याप्त नहीं जब तक वे सक्रिय शक्ति और कर्म से संयुक्त न हों। यहाँ गीता के कर्मयोग, शक्ति-परंपरा और

मानव-संघर्ष का गहरा संबंध दिखाई देता है [12]।

राम की शक्ति पूजा भारतीय परंपरा का आधुनिक पुनर्पाठ इसलिए भी है कि निराला राम को मानवीय बनाते हैं। वे राम की विजय को पूर्वनिर्धारित दैवी घटना नहीं मानते, बल्कि संघर्ष, साधना और आत्मबल की उपलब्धि के रूप में प्रस्तुत करते हैं। इससे परंपरा जीवित होती है; वह केवल पूजा की वस्तु नहीं रहती, बल्कि आधुनिक मनुष्य के संघर्ष की प्रेरणा बनती है [13]।

5. तुलसी, भक्ति और निराला की सांस्कृतिक चेतना

निराला की कविता *तुलसीदास* भारतीय भक्ति-परंपरा के आधुनिक मूल्यांकन का महत्त्वपूर्ण उदाहरण है। तुलसीदास भारतीय ज्ञान परंपरा में केवल भक्त-कवि नहीं, बल्कि लोकभाषा, सांस्कृतिक संगठन, नैतिक जीवन और जनमानस के कवि हैं। निराला ने तुलसी को गहरी श्रद्धा से देखा, परंतु यह श्रद्धा अंधानुकरण नहीं है। वे तुलसी में उस सांस्कृतिक शक्ति को पहचानते हैं जिसने मध्यकालीन समाज में लोकचेतना को भाषा और धर्म के माध्यम से जोड़ा [14]।

भक्ति-परंपरा में प्रेम, समर्पण, लोकभाषा, करुणा और सामाजिक संवाद के तत्त्व हैं। निराला इन तत्त्वों को आधुनिक संदर्भ में ग्रहण करते हैं। उनके लिए भक्ति पलायन नहीं, बल्कि मनुष्य के भीतर शक्ति, करुणा और व्यापकता उत्पन्न करने वाली चेतना है [15]। तुलसी की परंपरा से निराला भाषा और लोक के महत्त्व को भी ग्रहण करते हैं। वे संस्कृतनिष्ठ शब्दावली और लोकधर्मी भाषा दोनों का प्रयोग करते हैं। इस भाषिक बहुलता में भारतीय ज्ञान परंपरा की बहुस्वरता दिखाई देती है।

निराला की दृष्टि में भक्ति का मूल्य तब है जब वह मनुष्य को अधिक मानवीय बनाती है। यदि भक्ति रूढ़ि, सामाजिक अन्याय या जातिगत संकीर्णता में बदल जाए तो निराला उसे स्वीकार नहीं करते। इसी कारण वे परंपरा के भीतर रहकर परंपरा की आलोचना भी करते हैं [16]।

6. लोकचेतना और जनजीवन का ज्ञान

भारतीय ज्ञान परंपरा का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष लोकज्ञान है। लोकजीवन में श्रम, प्रकृति, ऋतु, उत्सव, भाषा, कहावतें, सामूहिक अनुभव और जीवन-संघर्ष की व्यावहारिक बुद्धि समाहित रहती है। निराला का काव्य इस लोकचेतना से गहरे रूप में जुड़ा हुआ है। वे केवल शास्त्रीय प्रतीकों के कवि नहीं, बल्कि सड़क, भूख, श्रम, गरीबी और साधारण मनुष्य के कवि भी हैं [17]।

'भिक्षुक' कविता में भूख का चित्रण केवल दया उत्पन्न करने के लिए नहीं है। वह सामाजिक संरचना की क्रूरता को उजागर करता है। 'वह तोड़ती पत्थर' में श्रमशील स्त्री भारतीय समाज की उस वास्तविकता का प्रतीक बन जाती है जिसे परंपरागत काव्य ने अक्सर उपेक्षित किया था [18]। निराला इस स्त्री को करुणा की वस्तु नहीं, बल्कि धैर्य, श्रम और मानवीय गरिमा की प्रतिमा के रूप में देखते हैं। यह दृष्टि भारतीय ज्ञान परंपरा के उस लोकधर्मी पक्ष से जुड़ती है जिसमें श्रम को जीवन का आधार माना गया है।

'कुकुरमुत्ता' में निराला ने स्थापित अभिजात्य सौंदर्य-बोध और सामाजिक दंभ पर तीखा व्यंग्य किया। यह कविता बताती है कि निराला जीवन के 'छोटे' और 'अस्वीकृत' रूपों में भी अर्थ देखते हैं [19]। भारतीय लोकदृष्टि भी इसी प्रकार जीवन की उपेक्षित वस्तुओं में अर्थ और जीवटता खोजती है। अतः निराला का लोकबोध आधुनिक सामाजिक आलोचना और भारतीय लोकज्ञान का सृजनात्मक संयोग है।

7. नारी, करुणा और मानवीय गरिमा

भारतीय ज्ञान परंपरा में नारी के अनेक रूप मिलते हैं—शक्ति, प्रकृति, विद्या, श्रद्धा, करुणा और सृजन। निराला ने नारी को केवल सौंदर्य या करुणा की प्रतिमा के रूप में नहीं, बल्कि संघर्षशील और गरिमामय सत्ता के रूप में चित्रित किया। 'वह तोड़ती पत्थर' में श्रमिक स्त्री का चित्रण हिन्दी कविता में नारी-गरिमा का अत्यंत महत्त्वपूर्ण उदाहरण है [20]।

निराला के यहाँ नारी के प्रति संवेदना भावुक नहीं है। वह सामाजिक यथार्थ से जुड़ी हुई है। श्रम करती हुई स्त्री, जीवन से संघर्ष करती हुई स्त्री और पीड़ा में भी आत्मसम्मान बनाए रखने वाली स्त्री—ये रूप निराला की मानवीय दृष्टि को स्पष्ट करते हैं। *सरोज-स्मृति* में पिता का शोक एक बेटी की स्मृति के माध्यम से जीवन की गहन करुणा में बदलता है [21]। यहाँ पारिवारिक

संबंध भारतीय संवेदना और आधुनिक आत्मानुभूति का संगम बन जाता है।

भारतीय ज्ञान परंपरा में करुणा का अत्यंत महत्त्व है। बौद्ध, भक्ति और वैष्णव परंपराओं में करुणा को मानवता का आधार माना गया है [22]। निराला की करुणा इसी व्यापक भारतीय संवेदना से जुड़ी हुई है, किंतु वह करुणा निष्क्रिय दया नहीं है। वह अन्याय के विरुद्ध नैतिक असहमति भी उत्पन्न करती है।

8. निराला का विद्रोह: परंपरा के भीतर से रूढ़ि-विरोध

निराला की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे परंपरा से जुड़े हुए होते हुए भी रूढ़ियों के विरोधी हैं। वे भारतीय ज्ञान परंपरा को गतिशील मानते हैं। उनके लिए परंपरा का अर्थ अतीत की जड़ पुनरावृत्ति नहीं, बल्कि वर्तमान जीवन के लिए सार्थक तत्वों का पुनर्सृजन है [23]। इसी कारण वे छंद, भाषा, विषय और दृष्टि में नवीन प्रयोग करते हैं।

निराला का विद्रोह केवल साहित्यिक नहीं, सामाजिक भी है। वे जातिगत अहंकार, वर्गीय विषमता, स्त्री-उपेक्षा और अभिजात्य संस्कारों के विरुद्ध खड़े होते हैं। उनकी कविता में शास्त्रीयता और लोक, आध्यात्मिकता और सामाजिक यथार्थ, करुणा और आक्रोश—इन सबका समन्वय मिलता है [24]। यह समन्वय भारतीय ज्ञान परंपरा की मूल प्रकृति से मेल खाता है, क्योंकि भारतीय परंपरा में भी शास्त्र और लोक, ज्ञान और कर्म, भक्ति और विवेक, साधना और समाज—सभी के बीच निरंतर संवाद रहा है।

निराला की आधुनिकता पश्चिमी अनुकरण पर आधारित नहीं है। उनकी आधुनिकता भारतीय सांस्कृतिक चेतना के पुनर्पाठ से निर्मित होती है। वे परंपरा को आधुनिक बनाते हैं और आधुनिकता को भारतीय मानवीय आधार प्रदान करते हैं [25]।

9. भाषा और शैली में भारतीयता

निराला की भाषा उनके भारतीय ज्ञान-बोध का महत्त्वपूर्ण संकेत है। उनकी भाषा में संस्कृतनिष्ठ गाम्भीर्य, लोकधर्मी सादगी, व्यंग्यात्मक तीखापन, संगीतात्मकता और मुक्त छंद की लय—सभी मिलते हैं। *राम की शक्ति पूजा* की भाषा महाकाव्यात्मक और संस्कृतगर्भित है, जबकि 'भिक्षुक' और 'कुकुरमुत्ता' जैसी रचनाओं में भाषा अधिक लोक-स्पर्शी और व्यंग्यपूर्ण हो जाती है [26]। यह भाषिक विविधता बताती है कि निराला भारतीय परंपरा को किसी एक शैली में नहीं बाँधते।

भारतीय ज्ञान परंपरा स्वयं बहुभाषिक और बहुस्तरीय रही है। संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, अवधी, ब्रज, खड़ी बोली और लोकभाषाएँ मिलकर भारतीय साहित्यिक चेतना का निर्माण करती हैं [27]। निराला की कविता में यह बहुस्तरता दिखाई देती है। वे भाषा को जीवित अनुभव से जोड़ते हैं। उनके लिए भाषा केवल अलंकारिक सजावट नहीं, बल्कि चेतना की अभिव्यक्ति है।

10. निष्कर्ष

निराला का काव्य भारतीय ज्ञान परंपरा का आधुनिक, आलोचनात्मक और मानवीय पुनर्पाठ प्रस्तुत करता है। वे वेदांत से आत्मबोध ग्रहण करते हैं, भक्ति से करुणा और लोकसंबंध, रामकथा से संघर्ष और मर्यादा, शक्ति-परंपरा से ऊर्जा और संकल्प, तथा लोकजीवन से जीवन की वास्तविकता और श्रम की गरिमा। उनकी कविता में भारतीयता जड़ सांस्कृतिक गौरव नहीं है; वह जीवित मनुष्य, उसकी पीड़ा, उसकी मुक्ति और उसके आत्मसम्मान से जुड़ी हुई है।

निराला परंपरा के कवि हैं, परंतु परंपरावादी नहीं; वे आधुनिक हैं, परंतु आत्मविस्मृत आधुनिक नहीं। उन्होंने भारतीय ज्ञान परंपरा को आधुनिक सामाजिक चेतना, स्वतंत्र व्यक्तित्व, नारी-गरिमा, श्रम-सम्मान और मानवीय करुणा से जोड़ा। इसीलिए निराला आज भी प्रासंगिक हैं। वे हमें सिखाते हैं कि सच्ची परंपरा वही है जो मनुष्य को अधिक स्वतंत्र, संवेदनशील, न्यायपूर्ण और करुणाशील बनाए।

संदर्भ-सूची

1. एस. राधाकृष्णन, *भारतीय दर्शन,* खंड 1. नई दिल्ली: राजपाल एंड संस, 2009.
2. नामवर सिंह, *छायावाद.* नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2012.
3. रामविलास शर्मा, *निराला की साहित्य साधना,* भाग 1. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2007.
4. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, *आधुनिक हिन्दी कविता.* नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन, 2014.
5. बलदेव उपाध्याय, *भारतीय दर्शन.* वाराणसी: चौखम्भा विद्याभवन, 2008.
6. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', *परिमल.* प्रयागराज: लोकभारती प्रकाशन, 2006.
7. बच्चन सिंह, *आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास.* नई दिल्ली: लोकभारती प्रकाशन, 2015.
8. रामविलास शर्मा, *निराला की साहित्य साधना,* भाग 2. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2007.
9. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', *सरोज-स्मृति.* प्रयागराज: लोकभारती प्रकाशन, 2006.
10. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', *अनामिका.* प्रयागराज: लोकभारती प्रकाशन, 2006.
11. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', *राम की शक्ति पूजा.* प्रयागराज: लोकभारती प्रकाशन, 2008.
12. भगवद्गीता, स्वामी रामसुखदास व्याख्या, *श्रीमद्भगवद्गीता.* गोरखपुर: गीताप्रेस, 2012.
13. रामस्वरूप चतुर्वेदी, *हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास.* प्रयागराज: लोकभारती प्रकाशन, 2011.
14. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', *तुलसीदास.* प्रयागराज: लोकभारती प्रकाशन, 2007.
15. हजारीप्रसाद द्विवेदी, *हिन्दी साहित्य की भूमिका.* नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2007.
16. रामचंद्र शुक्ल, *हिन्दी साहित्य का इतिहास.* वाराणसी: नागरी प्रचारिणी सभा, 2009.
17. मैनेजर पांडेय, *साहित्य और इतिहास-दृष्टि.* नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन, 2013.
18. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', *परिमल.* प्रयागराज: लोकभारती प्रकाशन, 2006.
19. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', *कुकुरमुत्ता.* प्रयागराज: लोकभारती प्रकाशन, 2007.
20. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', *अनामिका.* प्रयागराज: लोकभारती प्रकाशन, 2006.
21. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', *गीतिका.* प्रयागराज: लोकभारती प्रकाशन, 2006.
22. राहुल सांकृत्यायन, *बौद्ध दर्शन.* प्रयागराज: लोकभारती प्रकाशन, 2008.
23. नंददुलारे वाजपेयी, *हिन्दी साहित्य: बीसवीं शताब्दी.* प्रयागराज: लोकभारती प्रकाशन, 2010.
24. रामविलास शर्मा, *निराला की साहित्य साधना,* भाग 3. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2007.
25. नामवर सिंह, *कविता के नए प्रतिमान.* नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2011.
26. विश्वनाथ त्रिपाठी, *हिन्दी कविता का विकास.* नई दिल्ली: लोकभारती प्रकाशन, 2012.
27. रामविलास शर्मा, *भाषा और समाज.* नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2005.